मासिक पत्रिका सितम्बर 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	विजय भाटिया
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

कर्म का सिद्धान्त

साभार: वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार

'**कर्म**' के सिद्धान्त को एक दार्शनिक-सिद्धान्त मान कर उस पर सिर्फ़ भारतीय-चिंतकों ने विचार किया है, पाश्चात्य-चिंतकों ने इसे एक दार्शनिक-सिद्धान्त मान कर विचार नहीं किया। इसका मुख्य कारण यह हे कि भारत में पुनर्जन्म का सिद्धान्त यहाँ की विचारधारा का अभिन्न अंग रहा है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त कर्म के सिद्धान्त की ही उपज है। भारत के छ: मुख्य-दर्शनों में से एक दर्शन-'मीमांसा'-सिर्फ़ 'कर्म' पर लिखा गया है। गीता का तो सारा लक्ष्य ही 'कर्मयोग' का प्रतिपादन करना है।

'कर्म' का सिद्धान्त क्या है? यह भौतिक-जगत् में विद्यमान कारण-कार्य के नियम का ही आध्यात्मिक-जगत् में घटित होना है। कारण होगा तो उसका कार्य होगा, कार्य होगा तो उसका कारण होगा-अगर यह नियम ठीक है, अटल है, तो कर्म भी तो एक कारण है, इसका कार्य होना ही चाहिये, वह बात अटल होनी चाहिये। कर्म का फल अटल है-इसी को 'कर्म का सिद्धान्त' कहते हैं।

'कर्म' की चर्चा करते हुए यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, या वह दैव से, भाग्य से बँधा हुआ है? 'कर्म' का फल ही तो 'दैव' है, 'भाग्य' है, परन्तु क्या ऐसी हालत में मनुष्य को कर्म करने में स्वतन्त्र कहा जा सकता है? यह प्रश्न 'पुरुषार्थ' तथा 'भाग्य' के सनातन द्वन्द्व का प्रश्न है। भाग्यवादी कहते हैं कि जब कर्म का फल निश्चित है, तब मनुष्य का जीवन भाग्य से बँधा हुआ है; पुरुषार्थवादी कहते हैं कि आज जिसे हम भाग्य कहते हें विगत-काल में वह पुरुषार्थ था, पुरुषार्थ के बिना भाग्य का निर्माण हो ही नहीं सकता। अगर हम कहें कि इस जन्म में जो फल हम भोग रहे हैं वह पिछले जन्म का फल है, तो प्रश्न उठ खड़ा होता है कि पिछले जन्म में वह क्या था? अगर पिछले जन्म में भी वह भाग्य ही था, तो उससे पिछले जन्म में चले जायें, और इसी शंका को उठायें। पीछे-पीछे चलते जाने से समस्या हल नहीं होती, अनवस्था दोष आ जाता है, और यह मानना ही पड़ता है कि जिसे हम 'दैव' कहते हैं वह किसी समय 'पुरुषार्थ' था। अगर हम किसी जन्म में 'पुरुषार्थ' कर सकते थे, कर्म करने में स्वतन्त्र थे, तो इस जन्म में स्वतन्त्र क्यों नहीं, इस जन्म में 'पुरुषार्थ' कर सकते थे, कर्म करने में स्वतन्त्र थे, तो इस जन्म में स्वतन्त्र क्यों नहीं, इस जन्म में 'पुरुषार्थ' क्यों नहीं कर सकते? वस्तुत: वैदिक विचारधारा यही हे कि जीवन में पुरुषार्थ तथा दैव दोनों साथ-साथ चलते हैं। तभी अथर्ववेद में कहा-'मेरा किया हुआ सब-कुछ मेरे दायें हाथ में है, परन्तु उसके बावजूद विजय मेरे बायें हाथ का खेल है।'

यह हम देखते हैं कि प्रत्येक कर्म का फल नहीं मिलता। जब आत्मा इस चोले को छोड़ कर चल देता है, तब उन कर्मों का क्या होता है जिनका फल नहीं मिला? इसका उत्तर यह है कि उन कर्मों को बीज-रूप संस्कारों के रूप में सूक्ष्म-शरीर में लेकर उसके साथ आत्मा अगले जन्मों में जाता है और वहाँ वे बीज समय पाकर कर्म-फल के रूप में फलित हो जाते हैं। सूक्ष्म-शरीर में संस्कार ऐसे बने रहते हैं जैसे कटोरे में से केसर फेंक देने पर भी उसकी बास कटोरे में बनी रहती है। कर्म का तात्कालिक-फल भी मिलता है, वह फल कर्म करने वाले के मस्तिष्क में अच्छे या बुरे कर्म की प्रवृत्ति बन जाता है। प्रथम बार पाप करने वाले को अगर तत्काल फल नहीं मिला तो क्या है, उसकी पाप करने की प्रवृत्ति तो बन गई जो धीरे-धीरे उसका

जेल की तरफ मुँह कर देती है। इस प्रवृत्ति का बन जाना ही कर्म का तत्काल फल है। मनुष्य क्योंकि कर्म करने में स्वतन्त्र है, इसलिये कर्म के बन्धन को जब चाहे कर्म से ही काट सकता है।

निष्कार्म-कर्म क्या है? 'कर्म' के सिद्धान्त के बाद प्रश्न उठ खड़ा होता है कि अगर कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है, तो क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे हम कर्म भी करें और कर्म के बन्धन में भी न पड़ें? इस सम्बन्ध में वैदिक-समाधान यह है कि जब कामना-रहित कर्म किया जाता है, तब कर्म करने पर भी उसका बन्धन नहीं पड़ता। इसी भाव को गीता में 'निष्काम-कर्म' का नाम दिया है। यजुर्वेद के '**तेनत्यक्तेन भुंजीथा:**' का भी यही भाव है कि हम संसार में रहें, परन्तु निर्लिप्त होकर, निस्संग होकर, निष्काम होकर। गीता मे सकाम का विवेचन करते हुए कहा है कि सकाम-भाव के परिणाम का मनोवैज्ञानिक-क्रम है-विषयों का ध्यान, संग, काम, क्रोध, मोह, स्मृति-विभ्रम तथा बुद्धि-नाश; निष्काम का विवेचन करते हुए कहा है कि निष्काम-भाव के परिणाम का मनोवैज्ञानिक-क्रम है-रोग-द्वेष से विमुक्त होना, इन्द्रियों से विषयों का उपभोग करते हुए इन्द्रियों का स्वतन्त्र-विचरण करने के स्थान में आत्मा के वश में रहना, इस प्रकार प्रसाद-गुण प्राप्त करके बुद्धि का स्थिर हो जाना। यह सम्पूर्ण वर्णन इतना मनोवैज्ञानिक है जैसा मनोविज्ञान की अन्य किसी पुस्तक में नहीं मिलता।

'निष्कर्मण्यता' तथा 'निष्कामता' में भेद है। 'निष्कर्मणय' व्यक्ति काम ही नहीं करना चाहता, 'निष्काम-व्यक्ति' सम्पूर्ण शक्ति से काम में जुटा रहता है, परन्तु फल में आसक्त नहीं होता। गीता ने इस विचार को रहस्यमय कहा है। है भी रहस्यमय क्योंकि यह कैसे हो सकता है कि हम काम भी करें और फल की आशा भी न करें। निष्काम-योग का कहना यह है कि कर्म करना तुम्हारे अधीन है, फल तुम्हारे अधीन नहीं है, जो बात तुम्हारे हाथ की नहीं है उसकी आशा कर बैठने का क्या मतलब? जब हम कर्म के फल की बात करते हैं, तब यह सोचना होगा कि कर्म-फल में कौन-कौन से कारण सम्मिलित होकर फल को उत्पन्न करते हैं। जब हम कर्म करते हैं तब उसमें हमारा ही नहीं, दूसरों का कर्म भी शामिल हो जाता है, हमारे कर्म एक तरफ़ खींचते हैं, हमारे शत्रु के कर्म दूसरी तरफ़ ज़ोर लगाते हैं। इन सबका 'योग-ऋण' (Plus-minus) होकर जो शेष रहेगा वही तो कर्म-फल होगा। हम केवल अपने कर्म की ही बात करते हैं, उसके जो विरोधी तत्व हैं उन्हें हिसाब में से निकाल देते हैं। कर्मों का लेना-देना बराबर करके जो शेष रहे, वही कर्म-फल है। यह जमा-घटाना हमारे हाथ नहीं; फिर फल के लिये ज़िद क्यों?

इस पर प्रश्न उठता है कि क्या 'निष्काम-कर्म' सम्भव भी है? बिल्कुल सम्भव है। उदाहरणार्थ, डॉक्टर मरीज़ के बच्चे का इलाज करता है, जान लड़ा देता है, परन्तु बच्चा मर जाता है। क्या डॉक्टर रोने बैठ जाता है? वकील मुवक्किल का मुकदमा बड़ी होशियारी से लड़ता है, परन्तु हार जाता है। क्या वकील रोने लगता है? खिलाड़ी खेल में जूझ जाता है, परन्तु हार जाता है। क्या वह हाय-हाय करता है? हाँ, अगर डॉक्टर का अपना बच्चा मर जाय, तो वह परेशान हो जाता है। जो मन: स्थिति डॉक्टर मरीज़ के प्रति, वकील मुवक्किल के प्रति धारण करता है, उसी को अपने प्रति धारण कर ले तो यही 'निष्कामता' है।

वैदिक विचारधारा का जीवन के प्रति दृष्टिकोण त्यागपूर्वक भोग का दृष्टिकोण है। जीवन में सकाम भाव से रहना और निष्काम भावना से रहना-इन दोनों में महान् भेद है, और इस भेद को सम्मुख रखकर वैदिक साहित्य का निर्माण हुआ है। ■■

सितम्बर 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
01	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	क्या विद्या से अमरत्व प्राप्त हो सकती है?
08	डॉ. उमा आर्य (9968962885)	अहंकार का कारण और निवारण।
15	श्री लक्ष्मीकान्त (9897666491)	भजन
22	प्रो. अजीत कुमार (8882056852)	अनार्ष ग्रंथ क्यों त्याज्य हैं।
29	आचार्य राजू वैज्ञानिक (7011475777)	सुख का मार्ग।

अगस्त मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती कुलजीत कौर मरवाह एवं स. अमरजीत सिंह मरवाह	50,000/-	तनेजा फाउण्डेशन - श्री आर.के. तनेजा	2,100/-	श्री मूल राज अरोड़ा	1,100/-
श्रीमती संतोष मुंजाल	36,000/-	श्रीमती प्राची खेरा एवं श्री शिवम खेरा	2,100/-	श्री अमर सिंह पहल	1,100/-
श्री विजय कपूर	11,000/-	श्री राजेंद्र कुमार वर्मा	2,100/-	श्री विजय कृष्ण लखनपाल	1,100/-
श्रीमती कीर्ति टंडन	10,000/-	श्रीमती सुदर्शन बजाज	2,100/-	श्रीमती प्रभा खांडपुर	1,100/-
श्री अरुण बहल	6,200/-	श्री विद्या गाथा सरीन	2,100/-	श्री नरेंद्र वाधवा	1,100/-
डॉ. एस.एस यादव	6,100/-	श्री सुनील मेहता	2,100/-	श्रीमती कीर्ति टंडन	1,100/-
M/s मुंजाल शोवा लिमि. C/o श्री योगेश मुंजाल	5,100/-	डॉ. विनोद मलिक	2,100/-	श्री सुरेश गुप्ता	1,100/-
श्रीमती अमृत पॉल	5,700/-	श्रीमती रूचि महाजन	2,100/-	श्री शरद सभरवाल	1,100/-
श्री राजीव चौधरी	5,100/-	श्रीमती प्रेम शर्मा	2,100/-	श्रीमती रक्षा पुरी	1,100/-
श्रीमती उषा मरवाहा	5,100/-	श्री सुनील अबरोल एवं श्रीमती सरोज अबरोल	2,100/-	श्री एस.एल. आनंद	1,100/-
श्री अनूप बहल	5,100/-	श्रीमती रक्षा पुरी	2,100/-	कर्नल गोपाल वर्मा	1,100/-
श्रीमती सतीश सहाय	5,000/-	श्री एस.सी. गर्ग	2,100/-	श्री विजय सभरवाल	1,100/-
श्रीमती गीता आनन्द	5,000/-	श्रीमती उमा रस्तोगी	2,100/-	श्री डी.के. मग्गू	1,100/-
श्रीमती विमला भाटिया	5,000/-	सुश्री आदर्श भसीन	2,100/-	श्री प्रेम सहगल	1,000/-
श्रीमती अनीशा मुंजाल	5,000/-	श्रीमती सुधा गर्ग	2,100/-	श्रीमती सत्य चौधरी	1,000/-
श्री योगराज अरोड़ा	5,000/-	श्री एम.एल. छाबड़ा	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्री एस.सी. सक्सेना एवं श्रीमती शकुंतला सक्सेना	4,200/-	श्रीमती आशा चौधरी	2,000/-	श्रीमती चंदू सुमानी	1,000/-
श्रीमती सुदेश चोपड़ा	3,600/-	श्री योगेश मुंजाल	2,000/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री अशोक चोपड़ा	3,200/-	श्री सुख सागर ढींगरा	1,600/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्रीमती ललिता खरबंदा	3,100/-	श्री दीपिका सहाय	1,100/-	श्री कमलेश वोहरा	510/-
श्री विनीता कपूर	2,600/-	श्री कमलेश मल्होत्रा	1,100/-	श्रीमती उषा मदान	510/-
विंग कमाण्डर वीरेंद्र एवं श्रीमती दीप्ति शर्मा	2,100/-	श्रीमती आंवला ठुकराल	1,100/-	श्रीमती मुक्ता	501/-
श्रीमती सुशीला गुलाटी	2,200/-	श्री विजय मेहता	1,000/-	श्रीमती लेखा	500/-
श्री विजय भाटिया	2,100/-	श्रीमती सत्या चोपड़ा	1,000/-	श्री दक्षा सूरी	500/-
		श्रीमती दयानंद मनचंदा	1,100/-	श्रीमती पूनम एंड राज टुटेजा	500/-
		श्री महेश आर्य	1,100/-	श्री सतीजा ढींगरा	500/-
				श्री महिंद्रा भल्ला	500/-
				श्री सुभाष अमर	500/-
				श्री बी.आर. मल्होत्रा	500/-

पुरोहित द्वारा दान प्राप्त:—

❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम : ₹ 36,051/-

वैदिक सेन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ M/s Aspiring People : ₹ 2,100/- ❖ श्री योगेश सेठी : ₹ 2,100/-

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व दिनांक **19 अगस्त 2019 से 25 अगस्त 2019** तक आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 के प्रांगण में प्रत्येक वर्ष की भांति बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन वेद कथा उच्चकोटि के विद्वान प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने की। पंडित दिनेश दत्त आर्य जी एवं श्री अंकित उपाध्याय के मधुर भजनों का सबने आनन्द लिया।

प्रतिदिन यज्ञ प्रात: 7 से 8:30 बजे तक होता था। संचालन आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी करते थे और प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी द्वारा प्रवचन होता था।

सायंकाल का कार्यक्रम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक भजन और फिर 7.30 से 8.30 बजे तक प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी का प्रवचन होता था। शास्त्री जी ने बताया कि हमें वेद क्यों पढ़ने चाहिये। हमारे वेद ईश्वर की सबसे बड़ी देन है और यह केवल भारत के लिये ही नहीं अपितु विश्वभर के लिये हैं। ऋग्वेद पूरा मनोविज्ञान से भरा है तथा अथर्ववेद पूरा विज्ञान से भरा है।

21 अगस्त 2019 (बुधवार) सायंकाल भजन उपरान्त **"आचार्य रमाकान्त उपाध्याय स्मारक व्याख्यान"** का कार्यक्रम था। विषय था **"महर्षि दयानन्द की दृष्टि में भारतीय दर्शन"**। इसकी अध्यक्षता प्रो. शशि प्रभा कुमार, पूर्व कुलपति, सांची विश्वविद्यालय, वक्ता प्रो. ज्वलन्त कुमार जी थे और विषय प्रवर्तन आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र जी द्वारा था जो इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परामर्शदाता हैं।

बृहस्पतिवार, 22 अगस्त 2019 को (प्रात: 10:30 बजे से 12:30 बजे तक) महिला सम्मेलन का कार्यक्रम था। इसकी अध्यक्षा श्रीमती सन्तोष मुंजाल जी थीं। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम थे और डॉ. उमा आर्य तथा प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी के प्रवचन थे। प्रीतिभोज के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पूर्णाहुति और मुख्य समारोह रविवार, 25 अगस्त 2019 को प्रात: 8:00 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ, तत्पश्चात् अतिथियों ने मधुर भजन का आनन्द उठाया। डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने अपने प्रवचन में कहा कि हमें वेद प्रचार सप्ताह जैसे कार्यक्रम अवश्य करने चाहिये। छोटे-बड़े सबको ऐसे कार्यक्रम में भाग लेना चाहिये। आर्य समाज योगीराज श्री कृष्ण को एक महान योगी के रूप में स्मरण करता है। उनका महाभारत के युद्ध में जो एक अहम भाग था तथा गीता उपदेश के रूप में स्मरण किया जाता है।

प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में ज़ोर दिया कि वेद और ऋषि दयानन्द की शिक्षा केवल हिन्दी में न रहकर बाकी सभी भाषाओं बंगला, मराठी, उर्दू, अंग्रेजी, तमिल, तेलगू में भी अनुवाद होना चाहिए। तभी वेदों का ज्ञान सब लोगों तक पहुँच सकेगा। हमारा भवन जो बन रहा है-इसके पुस्तकालय में इन सब भाषाओं की पुस्तकें होनी चाहिये जिससे उस लाईब्रेरी का प्रत्येक व्यक्ति लाभ उठा सके।

श्री सुनील कान्त मुंजाल जी, चेयरमेन, हीरो इन्टरप्राईज़ एण्ड हीरो कॉर्पोरेट सर्विस प्रा. लि. ने वेदों पर रिसर्च का भी सुझाव दिया। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर ज़ोर दिया कि लाईब्रेरी केवल एक भवन और पुस्तकों से भरी न रह जाये बल्कि इसमें अधिक से अधिक लोग आकर पढ़ें और अपना ज्ञान बढ़ायें। इस पुस्तकालय का पूरा लाभ तभी होगा यदि यहाँ से लाभ उठाकर लोग अच्छे विद्वान, आचार्य, उपदेशक बनेंगे।

पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन, एम.डी.एच. ने आशीर्वाद देते हुए कहा-धर्मपाल जी का संदेश श्री विनय आर्य महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने शब्दों में बताया कि 'धर्मपाल जी शुभ कामना देते हैं' और श्री विनय आर्य जी ने भी इस बात पर ज़ोर दिया कि यह भवन बनकर एक भवन ही न रह जाये; बल्कि हमें कोशिश करनी है कि अधिक से अधिक संख्या में स्थानीय लोग इस वैदिक केन्द्र को संचालित करने में आगे आएँ। हम अपने मित्रों, बच्चों और परिवार के सदस्यों को आर्य समाज में लायें।

कार्यक्रम के अन्त में श्री विजय लखनपाल प्रधान ने सब अतिथियों, विद्वानों और सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद किया और प्रीतिभोज में सम्मिलित होने का आमंत्रण दिया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। ■■

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी पर्व – झलकियाँ

(19 अगस्त 2019 से 25 अगस्त 2019)

यज्ञशाला में हवन करते हुए।

आचार्य वीरेन्द्र विक्रम एवं प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी प्रवचन देते हुए।

प्रसाद ग्रहण करते हुए।

पं. दिनेश दत्त आर्य भजन प्रस्तुत करते हुए।

श्री योगेश मुंजाल, श्री सुनील कान्त मुंजाल एवं राजीव चौधरी

सभागार में उपस्थित श्रोतागण

श्री योगेश मुंजाल जी का स्वागत करते हुए श्री विजय भाटिया

प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी का स्वागत करते हुए श्री सुनील अबरोल

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी पर्व – झलकियाँ

(19 अगस्त 2019 से 25 अगस्त 2019)

मंच पर - श्री विनय आर्य, पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी, श्रीमती संतोष मुंजाल एवं श्री योगेश मुंजाल

श्री विनय आर्य जी का स्वागत करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा

श्री नरेन्द्र घई जी का स्वागत करते हुए श्री अमर सिंह पहल

डॉ. महेश विद्यालंकार जी प्रवचन देते हुए।

मंच पर श्री योगराज अरोड़ा, श्री सुनील कान्त मुंजाल, श्रीमती संतोष मुंजाल जी,
श्री सुमनकान्त मुंजाल एवं श्री योगेश मुंजाल

श्री सुनील कान्त मुंजाल जी सम्बोधित करते हुए।

श्रीमती सतीश सहाय जी स्मृति चिन्ह देकर सम्मान करते हुए श्रीमती संतोष मुंजाल जी

पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी से आशीर्वाद लेते हुए श्री योगेश मुंजाल जी